B.A. I (Honours) (Sub) 18.4.20
I Paper भारतीय दर्शन

रामानुज द्वारा शंकर के मायावाद का खंडन — भारतीय दर्शन में वेदान्त दर्शन के दो प्रमुख लेखक शंकर और रामानुज के बीच माया के विचार को लेकर वैचारिक भिन्नता दिखाई पड़ती है। रामानुज अपने विशिष्टाद्वैत में शंकर के मायावाद की आलोचना की है और सात प्रमुख तर्कों के द्वारा प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि शंकर का मायावाद एक भ्रामक सिद्धान्त है।

शंकर के दर्शन में माया ब्रह्म की शक्ति है जिसके आधार पर वह विश्व की निर्मिति करता है किन्तु माया के माध्यम के संसार अपने अधिष्ठान ब्रह्म नहीं का सकता है। चूंकि माया ईश्वर की एक शक्ति है इस लिए बल्कि की तरह उसके साथ रहती है जिस प्रकार जादूगर जादू की प्रतिभा से विभिन्न प्रकार का खेल दिखाता है उसी प्रकार ब्रह्म माया की शक्ति से नाना रूपात्मक उपस्थित करता है अतः मायाविशिष्ट ब्रह्म ही ईश्वर है। माया के अन्दर दो तरह की शक्तियां रहती हैं आवरण और विक्षेप — आवरण का अर्थ है वास्तविक स्वरूप को ढक लेना जैसे रस्सी को रस्सी के रूप में दिखाई नहीं पड़ना ही आवरण है विक्षेप का अर्थ है उस पर दूसरे वस्तु को आरोपित कर देना। माया के इन

के कार्यों का स्वभाव जब ब्रह्म पर पड़ता है तो
तो ब्रह्म का वास्तविक स्वरूप छिप जाता है
और नाम-रूप वाले पदार्थों के रूप में दिखाई
जाता है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट
हो जाता है कि शंकर माया को ब्रह्म की शक्ति
के रूप में स्वीकार करते हैं और इसे पारमार्थिक
दृष्टि से असत् लेकिन व्यावहारिक दृष्टि
से सत् मानते हैं। शंकर के इस विचार की
रामानुज ने आलोचना की है उन्होंने सात
तर्कों के द्वारा शंकर के मायावाद का खण्डन किया

(1) आश्रयानुपपत्ति – अविद्या का आश्रय शंकर ने ब्रह्म को माना है लेकिन ब्रह्म को माया का आश्रय मान लिया जाये तो उसके शुद्ध रूप का खण्डन हो जाता है क्योंकि ब्रह्म के अतिरिक्त माया के अस्तित्व को मानना पड़ता है। रामानुज के अनुसार जो कारण है वह कार्य नहीं हो सकता इस प्रकार अविद्या को आश्रय किसी में नहीं मान सकते।

(2) तिरोधानानुपपत्ति – जब ब्रह्म स्वयं प्रकाशमान है तब अविद्या ब्रह्म पर कैसे पर्दा डाल देती है यह असमान्य प्रतीत होता है। रामानुज कहते हैं कि वास्तव में माया का विचार एक भ्रामक विचार है जो अद्वैतवादियों की कल्पना की उपज है।

(3) स्वरूपानुपपत्ति — अविद्या को भावात्मक नहीं कहा जा सकता और यदि अविद्या भावात्मक है तब इसका अन्त नहीं हो सकता

यदि यह आवरण के रूप में है तब इसे एक अज्ञान की संज्ञा नहीं दे सकते। अज्ञान का मतलब होता है Absence of Knowledge अर्थात् ज्ञान का भावात्मक नहीं हो सकता।

(5) अनिर्वचनीयानुपपत्ति — अद्वैत वेदान्त में अविद्या को अनिर्वचनीय कहा गया है जबकि जगत के सभी पदार्थ या तो सत होते हैं या असत या सदसत् हो सकते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कोटि विरोधाभासात्मक प्रतीत होता है।

(6) प्रमाणानुपपत्ति — रामानुजाचार्य कहते हैं कि आत्मा को ब्रह्म किस प्रमाण के द्वारा सिद्ध होता है। अविद्या का प्रमाण क्या है क्योंकि यह तो प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द से नहीं जाना जा सकता है। इस प्रकार रामानुज के अनुसार अविद्या या माया को सिद्ध करने का कोई हेतु ही नहीं है।

(6) निवर्तकानुपपत्ति — शंकर का कहना है कि ब्रह्म का ज्ञान हो जाने के बाद अविद्या का नाश हो जाता है। रामानुज कहते हैं कि जो निर्गुण निर्विशेष है का ज्ञान पाना असम्भव होगा। भेद का ज्ञान स्वयं मिथ्या है।

(7) निवृत्त्यनुपपत्ति — रामानुज का कहना है कि अद्वैत वेदान्त में अविद्या को भावरूप कहा गया है लेकिन यह भावात्मक है तब उसका नाश कैसे हो सकता है। रामानुज के अनुसार अविद्या का नाश ईश्वर की भक्ति तथा आचरणों का वास्तविक ज्ञान से ही सम्भव है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रामानुज उपर्युक्त सात तर्कों का प्रयोग करके शंकर के मायावाद को एक भ्रामक सिद्धान्त साबित करने का प्रयास किया है लेकिन आलोचना के उचित अर्थ को न समझ पाने से आपत्तियाँ उठायी जाती है।